GIRL'S HIGH SCHOOL & COLLEGE, PRAYAGRAJ
WORKSHEET. No – 03
SESSION – 2020-2021
CLASS – IX-A, B, C, D, E, F
SUBJECT – HINDI

निर्देश :- अभिभावकों से ये अपेक्षा की जाती है कि वे ये सुनिश्चित करें कि छात्रा दो दिनों तक सम्बन्धित विषयवस्तु एवं पाठ का अध्ययन करे, तत्पश्चात दिए गए प्रश्नों का निर्देशानुसार उत्तर दे।

नोट :- पाठ्यपुस्तक = व्याकरण - सरस्वती व्याकरण सुमन (कक्षा - IX - X के लिए)
साहित्य - ICSE साहित्य सागर
साहित्य सागर (अभ्यास पुस्तिका)

व्याकरण

प्रश्न-1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए।

संसार के बड़े अथवा छोटे काम साहस के बिना नहीं होते। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी देश या जाति का इतिहास नहीं बन सकता। यह साहस का ही प्रभाव था जिसने शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीत सिंह जैसे अनेक सामान्य व्यक्तियों को कुछ से कुछ बना दिया।

सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं। सूरवंश के क्रूरकर्मा बादशाह मुहम्मद आदिल पर भरे दरबार में कितने ही सिरों और

Scanned with CamScanner

घड़ों को धरती पर गिराकर एक युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था, परंतु क्रोधांध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं। मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है। वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है। इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती, परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है। इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रशंसनीय तो है, परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है। सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं, धन-मान इत्यादि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है; वे हैं- हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस भी तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है 'कर्तव्यपरायणता'। अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकार परायण या समाज-हित-चिंतक नहीं कहा जा सकता। कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं पशु समझना चाहिए।

Scanned with CamScanner

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हज़ारों ऐसे काम हुए हैं जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। इन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं; परंतु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोसर्ग नहीं होता, क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदांध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में भी संकोच नहीं करते। सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए नहीं, किंतु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पल-पल आया करता है।

Scanned with CamScanner

देश, काल और कर्तव्य का विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न -

(i) साहस का जीवन में क्या महत्व है? स्पष्ट कीजिए।
(ii) किस प्रकार के साहस को ज्ञान की कमी के कारण प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता? उदाहरण भी दीजिए।
(iii) किन गुणों के कारण साहस सर्वोच्च कोटि का कहलाता है?
(iv) सत्साहस के लिए सबसे आवश्यक गुण क्या है और क्यों?
(v) सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता क्यों नहीं होती?

प्रश्न-2. निम्नलिखित विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए -
आज सारा संसार फ़ैशन का दीवाना है। हमारा अधिकांश व्यवहार फ़ैशन पर ही आधारित है। आपकी दृष्टि में फ़ैशन क्या है और यह आज के मनुष्य को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?

प्रश्न-3. निम्नलिखित विषय पर लगभग 120 शब्दों में हिन्दी में पत्र लिखिए -
अपने मित्र को पत्र लिखकर 'इंटरनेट के प्रयोग से होने वाले लाभ और हानियों' पर प्रकाश डालिए। साथ में उसे यह भी बताइए कि इसका सदुपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न-4. निम्नलिखित वाक्यों के परिवर्तन कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार लिखिए -

(i) विद्यार्थी पुस्तक पढ़ रहा है। (बहुवचन में बदलिए)
(ii) साँझ होते ही पक्षी अपने - अपने नीड़ को लौट आते हैं। (रेखांकित शब्द के स्थान पर सही शब्द का प्रयोग कीजिए)
(iii) उसकी बात सुनकर मुझे बहुत क्रोध आया। ('क्रोधित' का प्रयोग कीजिए)
(iv) बुद्धिमान पुरुष सत्य के मार्ग से नहीं हटता है। (वाक्य को स्त्रीलिंग में बदलिए)
(v) मुसाफिर धर्मशाला में विश्राम करते हैं। (भूतकाल में बदलिए)

प्रश्न-5. निम्नलिखित वर्तनी को शुद्ध करके लिखिए -
(i) इतिहासिक (ii) सधारण (iii) उत्तरदाई (iv) परिक्षा
(v) पूज्नीय (vi) प्रान (vii) अद्ययन (viii) आधीन
(ix) उपलक्ष (x) विस्वास

प्रश्न-6. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए -
(i) आकाश से बातें करना (ii) काला अक्षर भैंस बराबर (iii) ऊँची दुकान फीका पकवान
(iv) खून का घूँट पीकर रह जाना (v) गागर में सागर भरना

प्रश्न-7. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -
(i) शिक्षक (ii) सर्वथा (iii) सुगंध (iv) हाथी
(v) समुद्र (vi) रजनी (vii) लक्ष्मी (viii) अँधेरा
(ix) चंदन (x) कौशल

Scanned with CamScanner

साहित्य (पद्य भाग)

पाठ - साखी कवि - कबीरदास

प्रश्न-8. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पायँ।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय ॥

(i) उपर्युक्त दोहे का प्रसंग स्पष्ट कीजिए।

(ii) कबीर के सामने कौन-सी समस्या है?

(iii) कबीर ने भगवान को छोड़कर पहले गुरु के चरण स्पर्श क्यों किए?

(iv) उपर्युक्त दोहे के आधार पर गुरु का महत्व स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-9. काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय ॥
पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।
ताँते ये चाकी भली, पीस खाय संसार ॥

(i) "काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय" इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है?

(ii) "पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार"। इस पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने चक्की की पूजा को अधिक महत्व क्यों दिया है?

Scanned with CamScanner

(iii) कबीर की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।
(iv) कबीर दास जी ने मनुष्य की मूर्ति पूजा व दिखावे की भावना का खंडन किया है। क्यों?

प्रश्न-10- जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।
प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि ॥
सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।
सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय ॥

(i) 'प्रेम गली अति साँकरी' का भाव स्पष्ट कीजिए।
(ii) 'मैं' शब्द से क्या तात्पर्य है? 'मैं' का नाश होने पर क्या सुखद परिणाम होता है?
(iii) कवि स्याही, कलम और कागज़ किससे बनाना चाह रहे हैं?
(iv) 'ईश्वर के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता' - कबीर ने इस बात को किस प्रकार स्पष्ट किया है?

E N D

Scanned with CamScanner